समारोह में स्वागत गीत प्रस्तुत करती बालिकाएं

धना देवी – मल्ला सतीनौगाँव
अध्यक्षा, दुसाद गधेरा बचाओ मंच

पदयात्रा को जाती महिलाएं

गायन प्रस्तुत करती महिला उमंग प्रोड्यूसर कम्पनी की महिलाएं

समारोह में नृत्य करती बालिकाएं

सहयोग
श्री जगदीश भण्डारी, श्रीमती अनीता पॉल
सुश्री तलत मोईन, श्री मनुज पाण्डे

पत्र व्यवहार हेतु पताः
पो0 बैग 3, रानीखेत, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड,
फोन सं0 – 05966 221516, 240430

गधेरा!

जन, जल, जंगल व आजीविका आधारित समुदाय की त्रैमासिक पत्रिका

प्रति अंक रू. 2 सीमित वितरण हेतु अंक अष्टम्, माह–मई 2012

सम्पादकीय.....

प्रिय पाठकों, गधेरा पत्रिका की आठवीं प्रति आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये हम गधेरा बचाओ अभियान से जुड़े सभी साथियों का आभार व्यक्त करते हैं।

गगास बचाओ अभियान के तहत विगत सात वर्षों से ग्रासरूट्स द्वारा समुदाय के साथ मिलकर ''जल, जंगल, जमीन एवं आजीविका'' के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम सुचारू रूप से चलाने का प्रयास जारी है और इस प्रयास में अभी तक जुड़े दुसाद, कनाड़ी, माल्यागाड़, दूनागिरी क्षेत्र, रिसकन, खिरो तथा पनाई गधेरों के समुदाय ने अपने प्राकृतिक – संसाधनों के सदुपयोग एवं प्रवर्धन हेतु पूर्णतः समर्पित होकर इस अभियान का दिशा निर्देश करते हुये सफलता की ओर कदम ऊठाये हैं।

इस दौर में ''जल, जंगल, जमीन व जलवायु परिवर्तन'' की विकट परिस्थितियों का समुदाय को सामना करना पड़ रहा है एवं इसके कुप्रभाव एक चुनौती के रूप में सामने खड़े हैं जो जीवनचर्या को दिन प्रतिदिन कठिन बनाते जा रहे हैं। इसके लिए समुदाय के द्वारा एक साथ मिलकर अपने – 2 गधेरे की परिस्थितियों के अनुसार कार्ययोजना बनाकर इस मुद्दे पर समरूपता के साथ क्रियान्वयन कर जीवन गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयास जारी हैं।

इन परिस्थितियों के विकल्प ढूंढने के लिए जागरूकता फैलाने हेतु समुदाय में जन सभाएं, नुक्कड़ नाटक एवं पदयात्राएं जोरदार औजार साबित हो सकते हैं। विगत वर्षों में इस अभियान से जुड़े गधेरों में विश्व जल दिवस का आयोजन किया गया है जो धीरे – धीरे अभियान का रूप ले रहा है तथा अपने अपने क्षेत्र के समस्त बड़े गधेरों में चलेगा। इस सोच को सकरात्मक रूप में लेकर तथा पानी के मुद्दे को बीच में रखकर संबंधित समुदायों की चेतना से ही हम जल को बनाये रखने की महत्वपूर्ण पहल में सफलता हासिल कर सकते हैं।

इसी क्रम में दिनांक 04 अप्रैल 2012 को माल्यागाड़ के नवगठित मंच ने जलदिवस का विलम्बित आयोजन करने की पहल की तथा अपने 17 गाँवों द्वारा अलग–अलग क्षेत्रों से होकर महिलाएं, पुरूष व बच्चों ने पदयात्रा निकाली और अन्य गधेरों के ग्रामवासियों को भी इस पदयात्रा में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया।

सभी गधेरों ने एकजुट होकर गगास बचाओ अभियान की परिकल्पना को साकार रूप देने हेतु कई कदम आगे बढ़ा दिये हैं और कई कदम आगे जाना है ताकि लोगों के दृष्टिकोण में आने वाली विकट परिस्थितियों के मद्दे नजर समझ बनायी जा सके और हम सभी गगास बचाने में सफल हो सकें।

माल्यागाड़ पदयात्रा – 2012

दिनांक 04 अप्रैल 2012 को गगास बचाओ अभियान के अंतर्गत, माल्यागाड़ गधेरा बचाओ अभियान ''जल, जंगल, जमीन एवं आजीविका संरक्षण एवं प्रवर्धन'' को बढ़ाने के लिए 'जागरूकता पदयात्रा' का आयोजन किया गया। ग्राम नैड़ी में सभी पदयात्रियों ने एक मंच में आकर इस विषय की गंभीरता को समझने का प्रयास किया, जिसमें गधेरा मंच के लोगों द्वारा अपने कार्य अनुभवों व कार्यक्रमों की जानकारी उपस्थित समुदाय को दी।

पदयात्रा में आये सभी प्रतिभागियों द्वारा ''जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण जागरूकता'' के संदर्भ में नारे लगाये गये। पदयात्रा में ग्रासरूट्स, उमंग एवं कुमांऊ कारीगर समिति संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भी जोश व उत्साह पूर्वक भाग लिया।

यह पदयात्रा धनखोली से मुझौली, दैना होते हुए बुंगा से नैड़ी पंहुची जिसमें 92 प्रतिभागी उपस्थित रहे। पदयात्रियों की दूसरी टोली पागसा से कफलना, कुंजर, सुतरगाँव, नैनवालचैक होते हुए नैड़ी पहुंची जिसमें 42 प्रतिभागी उपस्थित रहे। माल्यागाड़ के उद्गम क्षेत्र ग्राम भिटारकोट से निकली तीसरी टोली ग्राम कुलसीबी, गुमोड़ी एवं बगथल से होते हुए ग्राम नैड़ी पंहुची जिसमें 40 प्रतिभागी उपस्थित रहे।।

ग्राम नैड़ी के निवासियों द्वारा सभी जनों का स्वागत दीप प्रज्वलन एवं बच्चों के द्वारा गाये गये स्वागत गीतों से किया गया। दुसाद गधेरा बचाओ मंच की अध्यक्षा श्रीमती धना देवी ने अपने अनुभव व कार्यकलापों को जन समुदाय के सामने रखा साथ ही संस्था द्वारा ''जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण'' के संदर्भ में किये गये कार्यों का उल्लेख किया एवं जंगलों को आग से बचाने के बारे में जानकारी दी।

उपस्थित समुदाय में वनाग्नि की समस्या प्रमुख रही एवं महसूस किया गया कि जहां पर वृक्षारोपण किया जा रहा हो, या कोई नयी प्रजाति पुनर्जीवित हो रही हो वहां के लिए आग बड़ी खतरनाक होती जा रही है जो एक मानव जनित आपदा के नये रूप में उभर कर सामने आ रही है। यदि समुदाय संगठित होकर अपने जलश्रोतों की सुरक्षा हेतु आगे आये तो जंगलों में आग का लगना कम किया जा सकता है।

इसी क्रम में दुसाद, कनाड़ी, माल्यागाड़ एवं अन्य गधेरों में जहां पर लोगों ने अपनी – अपनी पंचायतों में वृक्षारोपण किया है वहां गधेरा बचाव समितियों ने सही समय पर कार्ययोजना बनाकर अपने जंगलों को आग से बचाने हेतु साहस दिखाया है। आग पट्टियां बनायी गयी हैं, दिन या रात, जब भी आग उनकी पंचायत में आयी है उसे रोकने का प्रयास किया है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके द्वारा संरक्षित जंगल हैं।

इस प्रकार सभी उपस्थित गगास वासियों ने एक कदम और आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे संरक्षित वनों में बार–बार लगने वाली आग की आपदा को रोका जा सके ताकि हम जल, जंगल जैसी अमूल्य धरा संपत्तियों से समृद्ध रह पायें।

महिला उमंग प्रोड्यूसर कम्पनी की अध्यक्षा श्रीमती बसन्ती पवार ने आजीविका के बारे में जानकारी दी तथा सभी गधेरों से आये लोगों के द्वारा ''जल, जंगल, जमीन एवं आजीविका सरंक्षण'' के सभी कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प किया गया। इसी क्रम में ग्रासरूट्स कार्यकर्ता श्री महेन्द्र सिंह द्वारा पशु प्रजनन एवं नस्ल सुधार (कृत्रिम गर्भाधान) के संदर्भ में लोगों को जानकारी दी। नगदी फसल के रूप में केमोमाइल व स्ट्रॉबेरी की खेती के प्रयासों पर उपस्थित काश्तकारों ने अपने अनुभव बांटे।

ग्राम दैना की ग्रामप्रधान पुष्पा जोशी द्वारा पर्यावरण संबंधी कविता **''पर्वतों की पुकार''** प्रस्तुत की गयी, जो निम्नवत् है.....

नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
नीमुंवे दाणी दीदी, नीमुंवे दाणी, जंगल काटला जब सुखी जाल पाणि।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
हरियां काकड़ी काटि चकुवा दनै लै–लै, आपणा जंगल बनाया हंसी खुसी मन लै।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
गाड़ की चिफई ढुंगी को ढुंगी टेंकुल–टेंकुल, बांज क जंगल बंनूल, ठण्ड पाणि प्यूल।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
ओ दीदी ओ बैणा बात मेरी सुनिया, नान नान पेड़ छना उनुकैं बचाया।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
जसै हमार ननातिना, उसै छना बोट, सबै बैणा ध्यान धरिया, झन मारिया चोट।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
एक बाड़ में प्याज लगाय, एक बाड़ में आलु, जो हमर पेड़ काटल, उकै खाल भालु।
नि काटो नि काटो हमरो जंगल, माल्यागड़ गधेरा क ठण्ड पाणि।
बांजै की केड़ी दीदी–दीदी जो जंगल में आग लगाल, गर्दन हैजालि टैड़ि।

ग्राम नैड़ी से नारायण सिंह एवं राजेन्द्र सिंह ने अलग–अलग गधेरों से आये सभी समुदाय के लोगों का आभार व्यक्त किया तथा ''जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण सुरक्षा'' के कार्य को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका देने की बात कही, सभी उपस्थित पदयात्रियों ने ग्राम नैड़ी वासियों का उत्तम आयोजन हेतु धन्यवाद देते हुए सभा का समापन किया।

माल्यागाड़ पदयात्रा उपस्थिति विवरण – 2012

क्र.स.	गधेरा	कुल गाँव	कुल प्रतिभागी
1	माल्यागाड़	15	331
2	दुसाद	11	20
3	कनाड़ी	8	10
4	उद्गम क्षेत्र – दूनागिरी	5	8
5	कालीगाड़	2	16
	कुल	**41**	**385**